Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 09, (फरवरी, 2025)
पृष्ठ संख्या 19–21

हिमाचल प्रदेश के पवित्र उपवन एक सांस्कृतिक विरासत

साहिल चौहान एवं कमल किशोर
वन संवर्धन एवं कृषि वानिकी विभाग
डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय
नौणी, सोलन (हि.प्र.), भारत।

Email Id: – kamalkishorebhardwaj97@gmail.com

परिचय

भारत में पारंपरिक और स्वदेशी समुदाय का धार्मिक विश्वासं है कि औषधीय उपवन और पौधे प्रकृति में पवित्र होते हैं। पवित्र उपवन वन भूमि पर पेड़ों के विशेष स्थान हैं जो धार्मिक उत्साह और अर्थ के साथ सामुदायिक रूप से संरक्षित हैं। मनुष्य ने हमेशा झीलों, नदियों और जंगलों की देखभाल, संरक्षण और पूजा की है क्योंकि वह प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। धार्मिक और पारंपरिक संरक्षण प्रथाओं को एक दूसरे के साथ इस तरह से एकीकृत किया गया है कि मनुष्य और प्रकृति के बीच का बंधन हमेशा बना रहे और हमेशा सम्मान किया जाये।

पारंपरिक समुदायों द्वारा धार्मिक मान्यताओं के आधार पर वन भूमि को अलग करना भारत में सदियों से एक प्रथा रही है। संपूर्ण मानव जाति पारंपरिक रूप से भोजन, आश्रय, चारा, लकड़ी और दवा के रूप में जंगलों पर निर्भर है, जो सीधे इन समाजों की आजीविका से जुड़े हुए हैं।

भारतीयों का मानना है कि प्रकृति पांच बुनियादी तत्वों के प्रति श्रद्धा दिखाती है, जिन्हें भगवान के शरीर के रूप में माना जाता है और पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और आकाश के रूप में पूजा जाता है। इन पांच तत्वों को धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक कारणों से संरक्षित किया जाता है। इसलिए, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, भारत में पाए जाने वाले वन क्षेत्र में और उसके आसपास कई स्वदेशी समुदायों में एक महत्वपूर्ण अभिन्न अंग निभाता है। इन समुदायों को प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर रहने के लिए जाना जाता है और इस तरह जैव विविधता के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इतिहास

भारत में पवित्र उपवनों का अस्तित्व एक प्राचीन उपदेशक शिकारी सभा युग से है और उनकी उपस्थिति को 1800 के दशक की शुरुआत से प्रलेखित किया गया है। पेड़ों को देवताओं, और पैतृक आत्माओं का निवास मानते हुए, कई समुदायों ने जंगल के क्षेत्रों को अलग रखा और उनकी सुरक्षा के लिए नियम और रीति–रिवाज स्थापित किए, ये नियम उपवन से उपवन तक भिन्न होते थे लेकिन अक्सर पेड़ों की कटाई, वन तल से किसी भी सामग्री का संग्रह, और जानवरों की हत्या करने पर पीठासीन देवताओं द्वारा सजा का प्रावधान था, कभी कभी नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को मौत की सजा भी दी जाती थी और कभी–कभी पूरे समुदाय को बीमारी या फसल की विफलता के रूप में दंड मिलता था । इन सुरक्षात्मक प्रतिबंधों के परिणामस्वरूप, वर्षों से पेड़ों को संरक्षित किया गया था।

हिमाचल प्रदेश में पवित्र उपवन

हिमाचल प्रदेश में पवित्र उपवनों को (देव–वन) या (देवता का जंगल) कहा जाता है जो किसी

विशेष देवता को समर्पित हैं। अधिकांश उपवनों का प्रबंधन मंदिर समिति द्वारा किया जाता है। मंदिर समिति में करदार, पुजारी, भंडारी और गुर शामिल होते हैं। करदार मामलों का प्रबंधन करता है, पुजारी पूजा और अन्य अनुष्ठान करता है, गुर देवता का प्रवक्ता है और भंडारी भंडार कक्ष की देखभाल करता है।

मंदिर आमतौर पर पवित्र उपवन के अंदर स्थित होते हैं और घने जंगलों से घिरे होते हैं, कुछ मामलों में मंदिर या तो गांव में या पवित्र उपवन के बाहर होते हैं। हालांकि, पवित्र उपवनों का नियंत्रण मंदिर समिति के पास ही होता है।

उपवन से जुड़े स्थानीय मिथक और किंवदंतियां जंगलों को संरक्षित करने में एक लंबा रास्ता तय करती हैं, क्योंकि किंवदंतियां देवता की स्थापना से जुड़ी हैं, लेकिन पवित्र उपवन की स्थापना कब हुई थी, इसका कोई रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है।

किसी को भी पेड़ों को काटने या क्षेत्र से सूखी पत्तियों को निकालने की अनुमति नहीं है, ऐसे कई उपवन हैं जिनमें मानव प्रवेश भी प्रतिबंधित है। गुर द्वारा दिए गए आदेशों का समुदाय द्वारा सख्ती से पालन किया जाता है। पवित्र उपवन की लकड़ी का उपयोग मुख्य रूप से मंदिर के रखरखाव के लिए या सामुदायिक दावत पकाने के लिए ईंधन के रूप में किया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में पवित्र उपवनों का महत्व

हिमाचल प्रदेश में पवित्र उपवन इस क्षेत्र के सांस्कृतिक, पारिस्थितिक और आध्यात्मिक ताने–बाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये उपवन, अक्सर स्थानीय देवताओं को समर्पित होते हैं तथा धार्मिक विश्वासों और पारंपरिक प्रथाओं द्वारा संरक्षित जंगलों के स्थान हैं । उनके निम्नलिखित महत्वों का अवलोकन कुछ इस प्रकार से दिया गया है:

1. सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व

- स्थानीय देवताओं की भक्ति : पवित्र उपवन स्थानीय देवी–देवताओं को समर्पित हैं, जैसे नाग देवता, देवी, और अन्य क्षेत्रीय देवता।
- अनुष्ठान और त्योहारों के केंद्र : ये उपवन धार्मिक समारोहों, अनुष्ठानों और त्योहारों के लिए प्रमुख स्थानों के रूप में काम करते हैं, सामुदायिक और सांस्कृतिक निरंतरता की भावना को बढ़ावा देते हैं।
- वर्जनाएँ(Taboos) और संरक्षण : पारंपरिक वर्जनाएँ पेड़ों को काटने, शिकार करने या इन उपवनों के भीतर संसाधनों का दोहन करने से रोकती हैं, जिससे उनकी पवित्रता मजबूत होती है।

2. पारिस्थितिक महत्व

- जैव विविधता Hotspot : पवित्र उपवन वनस्पतियों और जीवों की दुर्लभ और स्थानिक प्रजातियों के लिये शरण के रूप में कार्य करते हैं, जो क्षेत्र में जैव विविधता को बनाए रखते हैं।
- देशी प्रजातियों का संरक्षण : ये उपवन अक्सर उन प्रजातियों को आश्रय देते हैं जो आनुवंशिक विविधता को संरक्षित करते हुए आसपास के क्षेत्रों में नहीं पाई जाती हैं।
- जल संसाधन प्रबंधन : कई पवित्र उपवन धाराओं और झरनों के जलग्रहण क्षेत्रों की रक्षा करते हैं, जिससे स्थानीय समुदायों के लिए एक स्थिर जल आपूर्ति सुनिश्चित होती है।
- जलवायु विनियमन : इन उपवनों में स्थित वन कार्बन पृथक्करण (Carbon Sequestration), स्थानीय जलवायु को ठंडा करने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं।

3. पारंपरिक ज्ञान और प्रथाएँ

- पवित्र उपवन पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान के भंडार हैं, जिनमें औषधीय पौधों, वन प्रबंधन और टिकाऊ जीवन शैली से संबंधित जानकारी शामिल है।

- इन पेड़ों से जुड़ी प्रथाएँ अक्सर प्रकृति के साथ सद्भाव पर जोर देती हैं, तथा पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देती हैं।

4. **सामाजिक और नैतिक मूल्य**

- सामुदायिक बंधन : उपवन सांप्रदायिक स्थानों के रूप में कार्य करते हैं जहाँ लोग त्योहारों और अनुष्ठानों के लिये इकट्ठा होते हैं, जिससे सामुदायिक संबंधों के साथ साथ सामाजिक एकता को भी मजबूती मिलती है।

- नैतिक शिक्षाएं : पवित्र उपवनों से जुड़े मिथक और किंवदंतियाँ अक्सर प्रकृति के प्रति सम्मान पर जोर देते हुए नैतिक शिक्षाएं देती हैं।

हिमाचल प्रदेश में पवित्र उपवनों के उदाहरण

- हिडिम्बा देवी वन, मनाली : देवी हडिम्बा को समर्पित, यह उपवन पौराणिक और आध्यात्मिक महत्व से घिरा एक संरक्षित क्षेत्र है।

- नाग देवता उपवन : हिमाचल प्रदेश में पाए जाने वाले, ये उपवन नाग देवताओं का सम्मान करते हैं और अक्सर जल निकायों के पास स्थित होते हैं।

- देव वन (देवताओं का वन) : देवताओं से जुड़े उपवनों के लिए एक सामान्य शब्द, जो उनकी व्यापक सांस्कृतिक भूमिका को दर्शाता है।

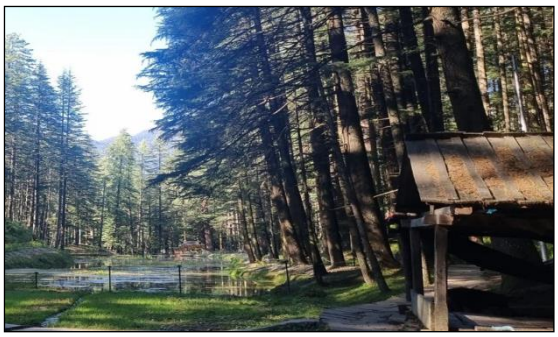

हिमाचल प्रदेश में पवित्र उपवन इस प्रकार धर्म, परंपरा और संरक्षण के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत और पर्यावरणीय स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

निष्कर्ष

पारंपरिक समुदाय–संरक्षित वन क्षेत्रों के रूप में पवित्र उपवन जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी अछूती प्रकृति, जिसे अक्सर सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं के कारण संरक्षित किया जाता है, उन्हें महत्वपूर्ण Carbon Sink बनाती है। अपने Biomass और मिट्टी में कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) को अवशोषित और संग्रहीत करके, पवित्र उपवन जलवायु परिवर्तन को कम करने में योगदान करते हैं। उनका संरक्षण आधुनिक पर्यावरणीय रणनीतियों के साथ -साथ पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान के एकीकरण को रेखांकित करता है।